पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में सांगीतिक समीक्षा एवं आलोचना का महत्व

डॉ. प्रीतेश आचार्य*

बीसवीं शताब्दी के महान दार्शनिक अध्येता महापंडित पण्डित गोपीनाथ कविराज जी विषय विवेचन के उस मानक के अनुयायी रहे है जिसके अनुसार आदर्श समीक्षक दोषदर्शी नहीं होता है।

वह तो गुणग्राही सहृदय होता है। क्योकि कलाओं के रसास्वाद के लिये यद्यपि दार्शनिक होना अपरिहार्य नहीं है परंतु सहृदय होना अति आवश्यक है इसलिए वास्तविक समीक्षक आलोचक वही होता है जो कलाकार की भावनाओं के साथ हृदय संवाद का अनुभव करता है। ''जिस शक्ति व्यापार अथवा वृति के द्वारा शब्द में अंतर्निहित अर्थ को स्पष्ट करने अथवा ग्रहण करने में सहायता मिलती है उस माध्यम को शब्द शक्ति कहते है इस आधार पर शब्दों के तीन प्रकार बताये गये है वाचक, लाक्षणिक तथा व्यजंक इसी आधार पर तीन शक्तियां मानी गयी है अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना ''[1] उपरोक्त तीनों का सही प्रयोग आलोचना समीक्षा में किया जा सकता है। समालोचना का उद्देश्य कला प्रस्तुति के आदर्श स्वरूप और आलोच्य स्वरूप के बीच की दूरी का आकलन करना, विवेचन करना और संभावित सुधार को यर्थात में प्रयोग हेतु उत्प्रेरित करना है। किसी भी परिस्थितियों में आलोचना नकारात्मक नहीं होनी चाहिए अपितु हाफ ग्लास एम्पटी न होकर हाफ ग्लास फिल्ड के दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए। आलोचक के गुण-धर्म के विषय में पत्रकार फ्रेंक मोरिस कहते है- Our responsibilites to fight against wrong projection अर्थात आलोचक अतिरंजना के अन्धकार के विरूद्ध एक सैनिक है। **''सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नही है मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए''** नवयुग के कवि दुष्यंत कुमार ने इन पंक्तियो के माध्यम से आलोचको के लिये एक मानक तय किया है जो नितांत प्रासंगिक है, उनके जीवन का नंदन बोध अत्यंत सकारात्मक है जिसकी रोशनी में उनके निम्न व्यंग आते है -

मत कहो आकाश में कोहरा घना है यह किसी की व्यक्गित आलोचना है, देखना है नेपथ्य में संभावना है।

*सम्पादक परिशीलन वाराणसी

''प्रसिद्ध आलोचक लांजिनस भव्यता को ही सर्वस्व मानते है, सहृदय के हृदय को प्रभावित करने वाली कविता सर्वदा भव्यता से भूषित रहती ह भव्यता काव्य का परम सौन्दर्य साधन है ।''[2] संगीत में भी यह भव्यता सर्वत्र विराजती है, यदि इसकी निष्पत्ति रसपूर्ण हो तो। संगीत के अमूर्त होने के कारण इसके द्वारा मानव में निहित क्षमता, प्राकृतिक शक्ति के आलोक की प्रत्येक किरण के प्रस्फूरण प्रकरण को स्पष्ट एवं पुष्ट करने का महत उद्देश्य पूर्ण किया जा सकता है, परंतु स्वतंत्रता के स्थान पर स्वच्छंदता-स्वेच्छाचार, आत्मकेंद्रित प्रवृति से आनंद की भूमिका प्रभावहीन होती जा रही है। यह अपनी प्रियता क्यो खोती जा रही है, आनंद व सुंदर के संवाद के स्थान पर नये-नये वाद क्यो विवाद करते है। जवकी नीर-क्षीर विवेक के लिए ही समीक्षा आलोचना के उपाय है। संगीत के क्षेत्र में स्वस्थ आलोचना एवं समीक्षा प्रायः विषय निरपेक्ष व्यक्तित्व के द्वारा पूर्व धारणा ग्रस्त होकर किये जाने से आलोचना एवं समीक्षा की परिपाटी नष्ट हो जा रही है।इसलिए औचित्य की कसौटी पर पूर्व धारणाओ से मुक्त हो के खरे खोटे की जाँच अनिवार्य है साथ ही पत्र पत्रिकाओ में स्वस्थ आलोचना एवं समीक्षा का अभाव भी विचारणीय बिन्दू है। इसलिए सार्थक आलोचना एवं समीक्षा के सम्भावित पहलुओ की भी जॉच पड़ताल किसी विद्वान के द्वारा अनिवार्यता करणीय है। जिससे इसके समाजिक सरोकार की भूमिका सार्थक हो सके ''चीन के महान राज नेताओ जे दूग ने आलोचना को परिभाषित करते हुये कहा था कि दौड़ते हुये थके साथी के चेहरे पर ठण्डे पानी का छींटा ताकि वह पुनर्जीवित हो सके।''[3] संगीत के क्षेत्र में आलोचना समीक्षा के गुरूतर दायित्व के निर्वहन हेतु एक सहृदय वर्ग का होना अति प्रासंगिक हो जाता है। जिसके अंतर्गत जिन कलाकारो की स्मृति शेष है उनकी रचनाओं एवं प्रस्तुतियों की समालोचना critical apperciation की शैली में होनी चाहिए वही संगीत की विविध विधाओ में जो कलाकार या सृजनाकार अभी present continuous स्थिति में है उनका विवेचन positive criticism की शैली में होना चाहिए, जिसके अंतर्गत व्यक्तिगत प्रभाव-मण्डल, नकारात्मक दृष्टिकोण मत-मतान्तर हित-लाभ स्वेच्छाचार आदि के प्रभाव से निरपेक्ष होकर आलोचना समीक्षा का निष्पक्ष निर्वहन संभव हो सके। ''संगीत विषय विशेषकर गायन-वादन के क्षेत्र में वर्तमान आम जनमानस में वर्तमान समय में आलोचना समीक्षा का एक सशक्त माध्यम सांस्कृतिक पत्रकारिता है, यथा-पत्र पत्रिकाओं समाचार-पाक्षिक दैनिक आदि में विषय मर्मज्ञ या विद्वान समीक्षक अथवा सांस्कृतिक पत्रकार वृन्द अपने-अपने ढंग से कार्यक्रम या कलाकार की आलोचना-समीक्षा करते है। किसी भी बाल द्वारा या नवप्रवेशी कलाकार के लिए विशेषण का प्रयोग समीक्षा आलोचना के मूल उद्देश्य की पूर्ति में सक्षम नही हो पाता यथा-डूबा दिया मंत्रमुग्ध कर दिया, भाव

–विभोर कर दिया, स्वरो की धारा में बहा ले गया, रस फूहार में भिगो दिया,अभिभूत कर दिया। परंतु इस परिणाम के विषय में कैसे– कैसे या किन विशेषताओं के कारण यह संभव हो सका उस पर विशेशण प्रयुक्त करने वाले पत्रकार समीक्षक निम्न बिंदुओं से निरपेक्ष रहते है, यथा–रचना प्रस्तुति का कौन सा भाग प्रभावी रहा है, कौन सा भाग विशिष्ट रहा तथा कार्यक्रम या कलाकार की अपनी व्यक्तिगत गुणवत्ता–विशेषता क्या रही''[4]

आलोचना समीक्षा हेतु उपरोक्त सभी बिंदुओ को भी ध्यान आवश्यक है क्योकि भिन्न–भिन्न कलाकार वर्ग–वरिष्ठ,बालक, किशोर सभी वर्ग के विविध क्षमताओ से युक्त कलाकारों की प्रस्तुतियो में एक जैसे विशेषणों का प्रयोग कार्यक्रम समीक्षा को निष्प्रभावी कर देता है। ''समीक्षा को सदा अपनी दृष्टि में कोई उद्देश्य रखकर चलना चाहिए जिस हम मोटे रूप से कला का स्पष्टीकरण और रूचि का परिष्कार कह सकते है ।''[5]

संगीत के विषय में लिखने वाले प्रायः अधिकांशतः पत्रकार सांगीतिक ज्ञान से निरपेक्ष होते है। वे यह नही जानते कि पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में कार्यक्रम में क्या विशेष और कैसा प्रस्तुत किया जा रहा है। संगीतशास्त्र में वर्णित उचित और अनुचित गुण–अवगुण के मानदण्ड से पूर्णतया अनभिज्ञ ऐसे लोग न जाने किस अधिकार से हर कार्यक्रम के छोटे–बड़े किसी व्यक्ति के लिए बड़े से बड़े शब्द खर्च कर इालते हैं। कार्यक्रम देने वाले का नाम (कभी–कभी गुरू का भी नाम), राग, शैली, घराना, राग–ताल का नामोल्लेख करते हुए यदि अपने स्वागत–सत्कार उपहार से खुश हुए ता प्रशंसा में सभी शब्द लिख मारे अन्यथा कार्यक्रम असफल, प्रभावशून्य, नीरस, उबाऊ और खुश हुए तो नर्सरी स्कूल से लेकर देश के शीर्षस्थ व्यक्ति के लिए एक समान शब्दों का उपयोग किया जाता है। यथा

–आनंद से सराबोर किया

–मंत्र मुग्ध कर दिया भाव विभोर कर दिया

–सुर सरिता में सभी गोते लगाते रहे–जोरदार या सशक्त प्रस्तुति

कार्यक्रम सफल रहा या सफल प्रस्तुति आदि। ध्यातव्य है कि ये सभी शब्द किसी क्रिया के परिणाम का बोध कराते है न कि परिणाम के परिप्रेक्ष्य में प्रक्रिया का।

कलाकार के द्वारा राग विस्तार, स्वर–लय, राग–ताल रचना की प्रस्तुति में किए ढंग से इन परिणामों (मंत्रमुग्ध) तक कैसे पहुँचा गया, इसका उल्लेख कभी नहीं मिलता क्योंकि इन्हें और प्रायः कार्यक्रम प्रस्तुत करने वालों को भी इसकी जानकारी नहीं रहती। गलेबाजी, उठा पटक जैसी लोक विचित्र क्रियाओं द्वारा आकर्षित

करते हुए अपने को विशिष्ट सिद्ध करना। भले इस आकर्षण से संगीत के प्रति विकर्षण हो। समीक्षा और आलोचना के सांगीतिक तथ्यों से अनभिज्ञ जन, कलाकार को झूठी प्रशंसा में निरर्थक विशेषण से लाद देते हैं ओर दोषों की आलोचना न करते हुए गलत कार्यक्रम देने वालों को निरकुंश छोड़कर स्वेच्छाचारिता को बढ़ावा देते है। यह इस उदाहरण से प्रमाणित किया जा सकता है–कि गायक के गुण –दोष, आवाज के गुण –दोष तथा उत्तम, मध्यम और अधम रचनाकार आदि के बारे में माध्यमिक स्तर की संगीत पुस्तकों में भी कम से कम पचास वर्षों से पढ़ाये जाने के बाद भी इन्हें निरूपयोगी समझते हुए इनसे विपरीत आचरण करने वाले अनेक पुरस्कार से विभूषित हो जाते है।

सन्दर्भ :–

1. भारतीय काव्य शास्त्र मीमांसा प्रोफेसर सतीश कुमार, 1975 पृ.54 रीगल लिंक बुक डिपो नई दिल्ली
2. भारतीय साहित्य शास्त्र प्रथम खण्ड बलदेव उपाध्याय,1963 पृ.210 नन्द किशोर एण्ड सन्स वाराणसी
3. पंण्डित अमिताभ भट्टाचार्य से विमर्श पर आधारित
4. प्रो. राजेश्वर आचार्य जी के व्याख्यान के अंश
5. समीक्षाशास्त्र पंण्डित सीता राम चतुर्वेदी, पृ. 123 अखिल भारतीय विक्रम परिषद वाराणसी

******